हिंदू कुछ और स्पष्टीकरण प्रदान करता है।

सूक्ष्म दुनिया और स्थूल दुनिया की सिद्धांत।

जो कुछ भी हम देखते हैं वह एक स्थूल दुनिया है। इसमें सब सजीव और निर्जीव वस्तुएँ शामिल हैं। महासागर, पहाड़, सितारे, ग्रह, पेड़, जानवर आदि। इनका भौतिक अनुभव होता है। ये दुनिया सबको एकसी दिखाई देती है। जैसे पहाड सबको पहाड ही दिखाई देता है। ऐसा नही है कि एक को पहाड तो दूसरे को वही पहाड नदी या कुछ और दिखाई देगा। इसलिए स्थूल दुनिया वास्तविक है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

दूसरी एक सूक्ष्म दुनिया है जो मन में रहती है। इस सूक्ष्म दुनिया का कमाल है कि एकही वस्तु किसी को अच्छी तो किसी खराब लगती है। मतलब ये कि एकही बाह्य वस्तु या व्यक्ति सबको एकसा सुख नही देती है, इसलिए यह सूक्ष्म दुनिया व्यक्ति के कल्पनाओं पर निर्भर करती है।

सूक्ष्म दुनिया खुशी, दुःख, पसंद, नापसंद से संबंधित विचारों या अवधारणाओं की दुनिया है जो हर व्यक्ति के लिए अलग अलग हो सकती है। इसलिए यह सूक्ष्म दुनिया अवास्तविक है और अपनी इच्छा पूर्ण होने या ना होने के आधार पर आपको सुखी या दुखी बनाती है।

पूरी समस्या यहां निहित है। चूंकि यह दुनिया अवधारणाओं पर आधारित है, इसलिए यह बदलती रहती है। एकही व्यक्ति के मूड और निर्णय भी बदलते रहते हैं। मिलनेवाली खुशी के अनुसार सब निर्णय लिये

जाते है। यहां तक कि प्यार, परोपकारिता भी खुशी की प्राप्ती पर आधारित है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

जिस वस्तु या व्यक्ति से हमे सुख मिलता है, उससे हमारा लगाव हो जाता है। इसी लगाव को प्यार कहते है।

वास्तव में प्यार खुशी के सीधे आनुपातिक है। अधिक खुशी तो अधिक प्यार ये समीकरण है। अवधारणा बदलने पर प्यार कम जादा होता है। इसलिए यह महसूस करना चाहिए कि खुशी के नाम पर जो भी प्राप्त होता है वह एक वैचारिक खुशी है। कोई सब्जी किसी को अच्छी लगती है तो किसी को नही। इसी प्रकार कोई भी वस्तु सबको एकसा सुख या दुःख नही देती है। इसका मतलब यह है की खुशी भौतिक वस्तुओं में कभी नहीं होती बल्कि व्यक्ति की कल्पना या अवधारणा में होती है। सूरज में प्रकाश है क्योंकि सूरज सबको एकसा प्रकाश देता है। उसी प्रकार यदि भौतिक वस्तुओं में सुख होता तो सबको एकसा मिलता। लेकिन अवधारणाएं इतनी पक्की हैं कि वे आपको महसूस करवाती हैं कि बाहरी वस्तुओं में खुशी है। असली सुख कभी खत्म नहीं होता। इस खुशी की अवधारणा को दिव्य भगवान की ओर मोड देना चाहिए। यही काम करेगा। हिंदू कहता हैं कि आपकी सारी भावनाएँ भगवान के लिये बनाओ। आपको पिता चाहते हैं? भगवान आपके पिता हैं। न केवल पिता, वह आपके लिए सबकुछ है। वह आपकी मां, भाई, बहन, दोस्त, प्रेमी है। आप मन से उसके साथ कोई भी संबंध विकसित कर सकते हैं। भगवान को सोचने से ही मन का शुद्धिकरण करता है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132